रूप कंवर नहीं, गुलाब कंवर

दौराला की रूप कंवर की चिता की आग अभी भी हमारे दिलों में जल रही है। क्या वह मन से सती होना चाहती थी? एक पूरा जीवन उसके सामने था। पुरुष प्रधान समाज में धर्म, समाज, परिवार. की इज्जत आदि का हवाला देकर आखिर कब तक औरतों का शोषण होता रहेगा। हमें गुलाब कंवर पैदा करनी हैं। लड़कियों, औरतों की सोई ताकत जगानी है।

संपादिका

उसका नाम रूप कंवर नहीं, गुलाब कंवर है। उम्र पैंतीस के आसपास। घाघरा, कमीज और ओढ़नी उसका पहनावा है। चुरू के पास के एक राजपूतों के गांव की बहू है गुलाब कंवर। अगर वह हिम्मत हार जाती तो वह भी उन हज़ारों औरतों में से एक होती जो रूढ़ियों, अंधविश्वासों और परदे के पीछे घुट-घुट कर दम तोड़ देती हैं।

गुलाब कंवर ने हिम्मत नहीं हारी। वह उठ खड़ी हुई—अपने पांवों पर। सात क्लास पढ़ी हुई गुलाब कंवर ने अक्षरों को अपना सहारा बनाया। उसने अक्षरों की अलख जगाई अपने गांव में, आसपास की ढाणियों (बस्तियों) में।

आज गांव की औरतें गुलाब कंवर को ढूंढती रहती हैं। कोई पढ़-लिख कर छोटा मोटा काम करना चाहती है। कोई गुलाब कंवर के पास इस बात की शिकायत लेकर आती है कि उसका पति दारू पीता है और उसे पीटता है। गुलाब सब लुगाइयों (औरतों) की बात धीरज से सुनती है और अनपढ़ और अनजान औरतों के कानों में जागरण के मंत्र फूंकती है। अपने गांव में गुलाब कंवर प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र चलाती है। जब गुलाब काले बोर्ड पर 'क' लिखना सिखाती है तो डेढ़-डेढ़ हाथ के कई घूंघट अपने आप उठ जाते हैं।

संग की सहेली, पढ़ने चलो, चलो सहेली। चुरू की उस ठंडी और धुंध में डूबी रात में एक स्वर गूंज रहा था। यह था गुलाब कंवर का।

गुलाब की उंगलियां हारमोनियम पर थिरक रही थीं। गोद में बैठा पांच साल का बच्चा टुकुर-टुकुर उन औरतों को देख रहा था जो उसकी मां के साथ गा रही थीं—"संग की सहेली, पढ़ने चलो।"

उस रात देर तक गुलाब कंवर मीठे स्वर में गाती रही। जागरण के गीत, लोक गीतों के आधार पर रचे हुए गीत, उस इलाके की औरतों को अब याद हो चले हैं।

गुलाब कंवर और उसकी बहन ब्याह कर ससुराल आई थी, 'ठंढ' राजपूतों का गांव। वहां दोनों बहनों ने बहुत अत्याचार सहे। यह याद कर गुलाब की आंखें आज भी नम हो जाती हैं। "औरतों की भी कोई जिंगाड़ी (जिंदगी) है। भेड़ बकरियां भी औरतों से अच्छी हालत में रहती हैं", गुलाब कहती है।

गुलाब की बहन को ससुराल में मार डाला गया। इस घटना ने गुलाब को भीतर तक हिला दिया। गुलाब पर भी ससुराल में कम अत्याचार नहीं हुए। लेकिन गुलाब अपनी बहन की मौत नहीं मरना चाहती थी।

इसी अंधेरे में गुलाब को अक्षरों की जोत दिखलाई पड़ी। वह उठ खड़ी हुई, अक्षरों के सहारे। गुलाब ने पहले अपने बूते पर औरतों को पढ़ाने-लिखाने की शुरुआत की।

"विरोध तो घणो (बहुत) हुआ। आज भी पड़ोस के लोग मुझे शक से देखते हैं। लेकिन मैंने अपना रास्ता चुन लिया है। अब मुझे कोई न रोक सके है।" गुलाब जोश भरी तेज़ आवाज़ में बताती है।

आज गुलाब कंवर एक उदाहरण बन गई है। घूंघट हटा कर, गोद में बच्चा लेकर जब दुबली, लंबी गुलाब चलती है तो औरतें कहती हैं—यह वही गुलाब कंवर है जो घुट-घुट कर मरती थी। सारे दिन रोती रहती थी।

"मैं अब अन्याय बर्दास्त नहीं कर सकूं—चाहे हमारे साथ हो या किसी दूसरे के साथ", गुलाब आत्मविश्वास भरी आवाज में कहती है।

साभार—अनौपचारिका